DR. RANJEET KUMAR
Dept. Of History
H. D. Jain College Ara
M.A , sem.- 2, CC-7, unit-5

असहयोग आंदोलन (1920-22) (Non-Cooperation Movement)

असहयोग आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक अध्याय था, जिसे महात्मा गांधी ने 1920 में शुरू किया. यह आंदोलन अहिंसात्मक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ सहयोग वापस लेने की अपील पर आधारित था. इसका मकसद था ब्रिटिश शासन के सभी सहयोगात्मक रूपों से दूरी बनाकर भारतीयों में एकता, आत्म-सम्मान और राजनीतिक जागरूकता पैदा करना.

इस आंदोलन ने जन-अभिव्यक्ति को संगठित रूप दिया, और पहली बार लाखों भारतीयों ने एक नेतृत्व के तहत ब्रिटिश शासन के खिलाफ सहयोग वापस लिया. यह आंदोलन भारतीय इतिहास में पहली बार जन-आंदोलन के रूप में उभरा जिसे गांधीजी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों पर चलाया गया.

पृष्ठभूमि: क्यों हुआ यह आंदोलन?

असहयोग आंदोलन के शुरू होने के पीछे कई ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक कारण थे:

1. प्रथम विश्व युद्ध का अनुभव

ब्रिटिश सरकार ने भारत को प्रथम विश्व युद्ध में सहयोगी बलों के पक्ष में युद्ध में भाग लेने के लिए मजबूर किया. भारतीयों को विश्वास था कि युद्ध का सहयोग देने पर इंग्लैंड भारतीयों को राजनीतिक अधिकार और स्वराज (स्व-शासन) देगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ.

2. रौलट एक्ट (1919)

1919 में ब्रिटिश सरकार ने रौलट एक्ट पास किया, जिससे राजनीतिक बंदियों के लिए कानूनी अधिकार सीमित हो गए. यह कानून पुलिस को बिना मुकदमे के लोगों को कैद करने की अनुमति देता था, जिससे जनता में भारी रोष फैला.

3. जलियांवाला बाग हत्याकांड

13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में ब्रिटिश सेना ने निहत्थे लोगों पर गोलीबारी कर दी, जिसमें सैकड़ों लोग मारे और घायल हुए. इस क्रूर घटना ने भारतीयों को भीतर-भीतर हिला दिया और राष्ट्रीय भावना को एक नई दिशा दी.

4. खलीफत आंदोलन का प्रभाव

पहले विश्व युद्ध के बाद ओटोमन तुर्क साम्राज्य के पतन के चलते मुस्लिम समुदाय में खलीफा के अधिकार को बचाने की भावना उभरी. गांधीजी ने खलीफत आंदोलन को अपनी आजादी की लड़ाई से जोड़ा, जिससे हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रयास किया गया और आंदोलन को व्यापक जन-आंदोलन बनाया गया.

गांधीजी का विचार और रणनीति

महात्मा गांधी ने हमेशा अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों को सर्वोपरि रखा. उनका मानना था कि बिना हिंसा के भी अंग्रेजों के खिलाफ जन-अंदोलन सफल हो सकता है. उन्होने कहा कि अगर भारतीय ब्रिटिश शासन के हर सहयोग को रोक दें — जैसे:

- सरकारी नौकरियों को त्याग देना
- ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार
- स्कूलों, कॉलेजों और अदालतों में न जाना
- ब्रिटिश की शिक्षा, कानून और अर्थव्यवस्था का समर्थन न करना
- तो अंग्रेजों के शासन को कमजोर किया जा सकता है.

गांधीजी का यह मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता आत्म-सम्मान और आर्थिक आत्म-निर्भरता दोनों से आती है. इसलिए उन्होंने स्वदेशी (खादी, भारतीय वस्त्र) और आत्मनिर्भरता की अपील की.

अनौपचारिक शुरुआत और प्रस्ताव

असल में असहयोग आंदोलन की शुरुआत 1 अगस्त 1920 को हुई, जब गांधीजी ने जन-आंदोलन की शुरुआत का संकेत दिया. हालांकि औपचारिक प्रस्ताव 4 सितंबर 1920 को कोलकाता में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में पारित हुआ.

इस प्रस्ताव में कहा गया:

1. ब्रिटिश सरकार के सभी औपचारिक और अनौपचारिक सहयोग को वापस लिया जाए.

2. भारतीय सरकारी सेवाओं, अदालतों और शैक्षणिक संस्थानों को बहिष्कृत किया जाए.

3. ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया जाए.

4. ब्रिटिश शासन की वैधता को चुनौती दी जाए.

इस प्रस्ताव को कांग्रेस ने सर्वसम्मति से अपनाया. इसका नेतृत्व सी.आर. दास के अध्यक्षता में किया गया और गांधीजी ने आंदोलन का मार्गदर्शन किया.

आंदोलन की विशेषताएँ

असहयोग आंदोलन में कुछ मुख्य विशेषताएँ थीं:

1. अहिंसा और सत्याग्रह

यह आंदोलन पूरी तरह से अहिंसा और सत्याग्रह पर आधारित था. गांधीजी ने आंदोलन की आत्म-शक्ति को अहिंसा के स्तंभ पर रखा और कहा कि हिंसा किसी भी हालत में स्वीकार्य नहीं है.

2. बहुमत की भागीदारी

पहली बार भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सभी वर्गों-बुजुर्ग, युवा, महिलाएं, व्यापारी, किसान, मजदूर ने एक-साथ भाग लिया. यह आंदोलन किसी एक वर्ग की लड़ाई नहीं रहा, बल्कि आम जनता की आवाज़ बन गया.

3. सामाजिक सुधार का हिस्सा

इस आंदोलन ने सिर्फ राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं रहा. अस्पृश्यता के अंत, समाज सुधार, राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना जैसे सामाजिक मुद्दे भी उठाए गए.

आंदोलन के मुख्य आयोजन और घटनाएँ

1. विधिवित बहिष्कार
- विद्यार्थी सरकारी विद्यालयों और कॉलेजों में पढ़ना छोड़ने लगे.
- वकीलों ने सरकारी अदालतों में बयान देने से इनकार कर दिया.
- सिविल सेवाओं में कार्यरत भारतीयों ने त्यागपत्र दिए.
- अंग्रेजी वस्तुओं के बहिष्कार की मुहिम चली.

2. हड़तालें और आर्थिक प्रभाव

आंदोलन के दौरान कई इलाकों में बड़े पैमाने पर हड़तालें हुईं. सरकारी सेवाओं का बहिष्कार होने से प्रशासन प्रभावित हुआ. 1921 में 396 हड़तालें हुईं, जिनमें लगभग छह लाख श्रमिक शामिल थे और ब्रिटिश शासन को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा.

3. खादी और स्वदेशी का प्रचार

गांधीजी ने खादी का प्रचार किया और जनता से प्रेरित किया कि वे अपनी घरेलू वस्त्र उत्पादन को अपनाएं और ब्रिटिश कपड़े का बहिष्कार करें. इससे भारतीय उद्योगों को समर्थन मिला और आर्थिक आत्म-निर्भरता की भावना मजबूत हुई.

4. ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया

शुरू में सरकार ने आंदोलन को शांतिपूर्ण मानते हुए सख्ती से निपटा. लेकिन जैसे ही आंदोलन बिगड़ते रहा, कई नेताओं को गिरफ्तार किया गया और क्षेत्रीय दबाव उत्पन्न हुआ.

चौरी-चौरा कांड और आंदोलन की समाप्ति

4 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश के चौरी-चौरा नामक गाँव में असहयोग आंदोलन के दौरान हुईड़ हिंसा ने आंदोलन को एक निर्णायक मोड़ दिया. पुलिस की गोलीबारी के बाद भीड़ ने गुस्से में पुलिस थाने को आग लगा दी, जिसमें लगभग 22 पुलिसवाले मारे गए.

गांधीजी ने स्पष्ट रूप से अहिंसा की नीति अपनाई थी, और इस हिंसा ने उनके सिद्धांतों के विपरीत था. इसलिए उन्होंने आंदोलन को 12 फरवरी 1922 को तत्काल वापस ले लिया. यह निर्णय कुछ नेताओं और आम जनता के लिए निराशाजनक रहा, पर गांधीजी ने अहिंसा के सिद्धांत पर कायम रहते हुए निर्णय लिया.

आंदोलन का परिणाम और प्रभाव

असहयोग आंदोलन भले ही औपचारिक रूप से जल्दी समाप्त हो गया, लेकिन इसके गहरे परिणाम रहे:

1. राष्ट्रीय भावना में उभार

यह आंदोलन पहली बार आम जनता को ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित रूप से उठने के लिए प्रेरित किया. इससे जनता में राष्ट्रीय-स्वतंत्रता की भावना बहुत मजबूत हुई.

2. स्वदेशी का अभ्यास और आर्थिक प्रभाव

स्वदेशी का प्रचार और ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार भारतीय उद्योग और कुटीर उद्योग को समर्थन मिला, जिससे आर्थिक आत्म-निर्भरता की भावना विकसित हुई.

3. समाजिक एकता और सहयोग

आंदोलन ने हिंदू-मुस्लिम, किसान-शहरी, महिला-पुरुष सभी वर्गों को एक ही मंच पर लाया. इससे सामाजिक एकता और राष्ट्रीय भावना में वृद्धि हुई.

4. स्वतंत्रता संग्राम की दिशा में बदलाव

असहयोग आंदोलन के समाप्त होने के बाद देशव्यापी आंदोलन कुछ समय के लिए बाधित रहा, लेकिन इससे क्रांतिकारी विचारों को भी गति मिली. कुछ युवाओं ने अब हिंसात्मक तरीकों की ओर रुख़ करना शुरू किया, जिससे बाद के स्वतंत्रता आंदोलन और क्रांतिकारी संगठनों का उदय हुआ.

आंदोलन का मूल्यांकन

- असहयोग आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में कई मायनों से एक नई शुरुआत की:
- यह आंदोलन जनता को संगठित करने में सफल रहा.
- इससे भारत भर में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हुई.
- गांधीजी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांत को व्यापक लोक-मान्यता मिली.
-

यह आंदोलन बाद के सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन जैसी मुहिमों की नींव बना.

सारांश (Summary)

असहयोग आंदोलन भारतीय इतिहास का एक निर्णायक और प्रभावी अध्याय था जिसने भारत को ब्रिटिश शासन के खिलाफ एकजुट किया. गांधीजी के नेतृत्व में यह आंदोलन अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों पर आधारित था. आंदोलन ने आम लोगों को राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया, ब्रिटिश शासन को आर्थिक रूप से नुकसान पहुँचाया, और भारतीयों में आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता की गहरी भावना जगाई. हालांकि यह आंदोलन हिंसात्मक घटना के कारण जल्दी समाप्त हुआ, इसके गहरे परिणाम रहे, और यह आगे के स्वतंत्रता संघर्ष के लिए एक मजबूत आधार बन गया.